शम्पा शाह

गोदना

थानी शरीर पर चित्रकारी

कहते हैं ना कि भले ही सबका गला सुरीला नहीं होता पर नहाते समय सभी गायक बन जाते हैं। इसी तरह किताब-कॉपी में चित्र बनाना भले ही किसी को पसन्द न आए पर हाथ-पैरों में गूदा-गादी करनी हो तो देखो सब के सब चित्रकार निकलेंगे। क्या ही अच्छा हो जो स्कूल में कुछ दिन सिर्फ हाथ-पैरों पर चित्र बनवाए जाएँ। वैसे तो मेहँदी, आलता, नाखून पॉलिश और बिन्दी-काजल भी तो शरीर पर की गई चित्रकारी ही तो है। संजय दत्त, शिल्पा शेट्टी, शाहरुख खान ने भी गहरी नीली स्याही से अपने शरीर पर टैटू चित्र बना रखे हैं।

शरीर पर चित्रकारी थानी गोदना

शरीर पर चित्र बनाने की परम्परा बहुत पुरानी है। दक्षिण अफ्रिकाई देशों, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैण्ड, पौलीनेशिया चीन, जापान, इण्डोनेशिया आदि जैसे कई देशों के आदिवासी समाजों में शरीर पर कच्चे या पक्के चित्र बनाने की लम्बी परम्परा रही आई है। कई समाजों के लोग शिकार करने या मछली पकड़ने जाते समय, नृत्य-उत्सवों पर अपने शरीर पर मिट्टी, गेरू या फूल-पत्ती के रस से कच्चे चित्र बनाते हैं। काम पूरा होने पर इन्हें मिटा लेते हैं। इसी तरह पक्के चित्रों को टैटू, गोदना या गुदना कहते हैं। "टैटू" ताहिती भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है "अंकित करना"।

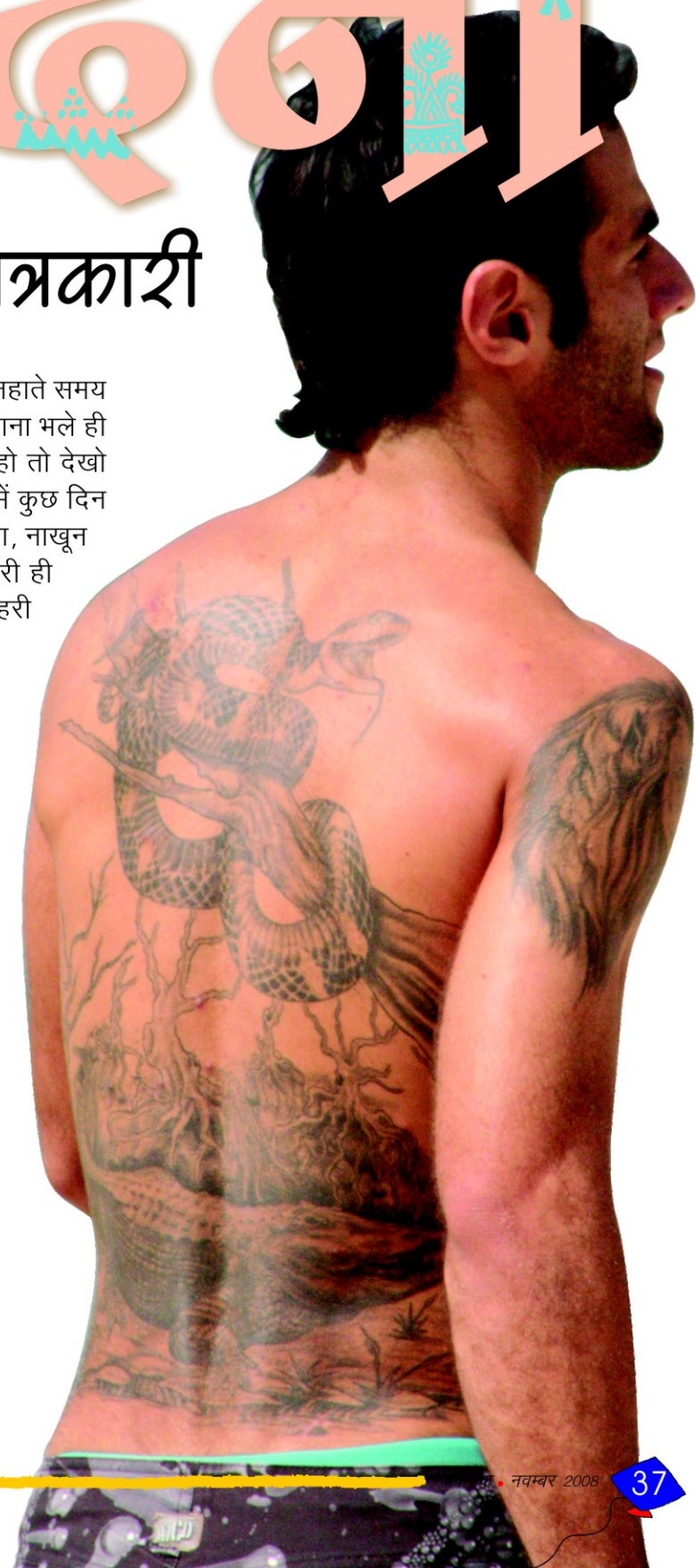

उड़िया कथाओं में गोदना

एक उड़िया कथा में ज़िक्र आता है कि यम देवता को लोगों की पहचान करने में बड़ी दिक्कत होती थी। इसलिए सबसे पहले उन्होंने अपनी बहू के गोदना चित्र बनवाए और फिर दूसरों से भी ऐसा ही करने को कहा ताकि उन्हें पहचानने में सुविधा हो। शायद इसीलिए ग्रामीण आदिवासी स्त्रियाँ आज भी मानती हैं कि बाकी सब कुछ यहीं धरा रह जाएगा पर गोदने शरीर के ऐसे गहने हैं जो मरने के बाद भी उनके साथ जाएँगे। उनका मानना है कि गोदना गुदवाने में दर्द तो बहुत होता है लेकिन अगर यह दर्द सह लिया तो जीवन के दूसरे दर्दों को सहने की ताकत आ जाती है। यानी इन समाजों में गोदने सिर्फ सुन्दरता की खातिर तो नहीं ही बनाए जाते।

गोदना बनाया कैसे जाता है?

भारत में गोदना बनाने वालों के लिए देवारिन, बदनिन, चिन्हारिन, गोदावरिन आदि बहुत से नाम हैं। शरीर पर पक्का गोदना बनवाने में खासा दर्द सहना पड़ता है। गोदना का रंग काली स्याही या कोयले को बारीक पीस, छान कर आक अथवा ऐसे ही किसी दूसरे पेड़ के दूध में घोल से तैयार की जाती है। इसके आलावा भिलवा, रमतिल्ला या किसी अन्य तेल को जला कर उससे बने काजल में पानी या तेल मिलाकर भी स्याही तैयार होती है। गोदने बनाने के लिए सबसे पहले पतली-सी सींक को स्याही में डुबोकर चित्र बनाया जाता है। फिर रंग को चमड़ी में घुसाने के लिए सुइयों से चित्र की रेखाओं पर छेद किए जाते हैं। पतली लकीरों के लिए 1 से 5 सुइयाँ मिलाकर छेदा/गोदा जाता है। तथा मोटी लकीरों के लिए 5 से 20 सुइयाँ मिलाई जाती हैं। धातु की खोज से पहले मछली के काँटों या पत्थर से नुकीली सुइयाँ बनाई जाती थीं। बहुत से पेड़ों के मज़बूत काँटे भी सुई का काम देते हैं। अब तो स्टील की सुइयाँ ही उपयोग में लाई जाती हैं। अब तो बैटरी या बिजली से चलने वाली मशीन से भी गोदना किया जाता है। सुइयों के चुभने से छलक आए खून को साफ कपड़े से पोंछकर फिर से रंग लगाया जाता है। गाँवों में गोदना गुदवाने के बाद घाव को ताज़े गोबर-पानी से धोकर उस पर हल्दी-तेल का लेप किया जाता है। गोदने की जगह पर आई सूजन और दर्द से हफ्ते-दस दिन में छुटकारा मिल जाता है।

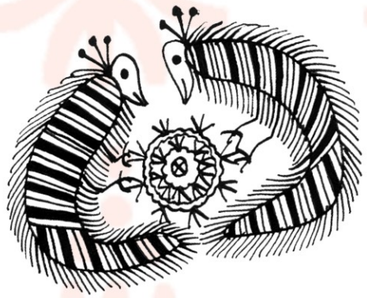

अजब चिरैया- बाँह में अन्दर की ओर गुदवाते हैं

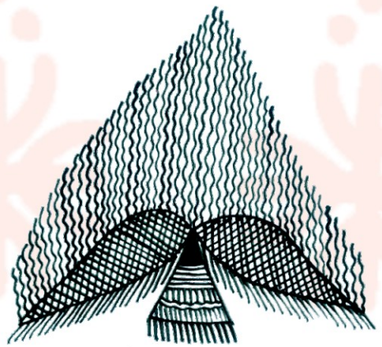

झूम बराबरः बाँह के बाहर की ओर, कुहनी के ठीक नीचे गोदा जाता है

गोदना की बैगा कहानी

एक बार देवताओं की सभा हुई। इन्द्र किसी बात पर गुस्सा हुए और सभा छोड़कर चले गए। कोई उन्हें मनाने नहीं गया पर महादेव-पार्वती को चिन्ता सताने लगी कि अब धरती पर बिना बारिश के जीवन कैसे चलेगा? बारह बरस लम्बा अकाल पड़ा। महादेव-पार्वती ने धरती की सेवा करने वाले नागा बैगा तथा उसकी पत्नी नागा बैगिन को इन्द्र को मनाने के लिए कहा। बैगिन को बिना साज-सिंगार के इन्द्र के दरबार में जाने में संकोच हो रहा था। तब महादेव-पार्वती ने बादी-बदनिन (गोदना चित्रकार) को बनाया, जिन्होंने उस बैगा स्त्री का गोदने से सिंगार किया। बैगा-बैगिन इन्द्र के पास गए और गुहार लगाई। उधर महादेव ने बारिश की आस में धरती पर हल चलाना शुरू कर दिया। हल की नस धरती में सोए मेंढक को लगी। वह ज़ोर-ज़ोर से नरियाने लगा। उसकी देखा-देखी मोर कहरियाने लगे। देखा-देखी सारे जानवरों ने आसमान सर पर उठा लिया। आवाज़ सुन इन्द्र घबरा उठे। उन्हें लगा कि यदि अब बैगा-बैगिन की बात नहीं सुनीं तो सारे जीव बगावत कर देंगे। उन्होंने झट से बैगा-बैगिन की बात मान ली और धरती पर झमाझम पानी बरसने लगा।

गोदने के डिज़ाइन

ग्रामीण एवं आदिवासी समाजों में गोदना गुदवाने की परम्परा आज भी कायम है। प्रायः सभी आदिवासी समाजों के अपने कुछ खास डिज़ाइन होते हैं जिनसे उन्हें एक खास पहचान भी मिलती है। जैसेः

इलाका/समाज	डिज़ाइन
गुजरात तथा राजस्थान के रेगिस्तानी इलाकों में रहने वाला घुमन्तु पशुपालक रेबारी समुदाय	रेबारी स्त्रियाँ गले पर रिण (-), धन (अ), बिन्दु (.) तथा ऊँट आदि के चिन्हों की कई कतार बनवाती हैं। यदि कोई लड़की कुछ ज़्यादा सुन्दर हो तो वह नज़र के टीके के बतौर गाल पर धन का चिन्ह गुदवा लेती है।
छत्तीसगढ़ की उराँव आदिवासी स्त्रियाँ	माथे पर खड़ी और आड़ी रेखाओं से बने आकार बनाती हैं
गुजरात, राजस्थान तथा मध्यप्रदेश की भील तथा भिलाला आदिवासी	स्त्रियाँ आँखों के नीचे काजल जैसी रेखा तथा आँखों के बाहरी कोर पर अर्ध-चन्द्राकार तथा बुन्दकियों से बने चीरल्या, बाँह और पैरों पर आम्बा-मोर (आम पर मोर)
अरूणाचल प्रदेश की आपातानी समूह	ऊपर कपाल से नाक के छोर तक इकलौती मोटी लकीर
मध्यप्रदेश की गोंड स्त्रियाँ	मुर्गा जोड़ी, कंघी, करेला चानी, सीता चौक, लवंग फूल
बिहार के ग्रामीण अंचल में	झूम बराबर
मध्य प्रदेश व छत्तीसगढ की बैगा स्त्रियों को गोदना गुदवाने का बहुत शौक होता है। वे शरीर के हर भाग पर मोटी रेखाओं से बड़े-बड़े गोदने गुदाती हैं।	माथे के बीचोंबीच "ट" आकार का चूल्हा और उसमें एक बिन्दु जो आग का प्रतीक है, उसके दोनों ओर अन्न और चावल के ढेर। हाथ, पैर, पीठ, छाती, गला सबके लिए खास गोदने हैं।

किस उम्र में गोदने गुदवाते हैं?

इतने सारे गोदने बनवाने हों तो यह एक दिन में तो हो नहीं सकता। दर्द से प्राण ही निकल जाएँगे। इसलिए स्त्रियाँ कई सालों में धीरे-धीरे यह काम कराती हैं। 8-10 बरस की उम्र में लड़की पहला गुदना माथे पर गुदाती है। 11-14 बरस की उम्र में पीठ पर, 15-16 बरस में पैर-हाथ के अगले हिस्से, 16-18 बरस में पैरों के पिछले हिस्से और बच्चा पैदा होने के बाद छाती पर गुदवाती हैं।

ज़्यादातर समाजों में खास तौर पर स्त्रियाँ ही गोदने गुदवाती हैं। पुरुष शौकिया तौर पर किसी देवता की आकृति या फिर कोई नाम गुदवाते हैं। स्त्रियों के गोदनों से उनकी चिन्ता, स्वप्न और कल्पनाओं की झलक भी मिलती है। चूल्हे में आग, अन्न के ढेर, सीता की रसोई, कुएँ-बावड़ी, सूरज-चाँद जैसे चिन्ह लगभग हर आदिवासी/ग्रामीण समाज में मिलते हैं। ये परिवार के लिए अन्न-जल जुटाने की चिन्ता को झलकाते हैं। तमाम देवी-देवता, उनके रथ-पालकी, चौक शुभकामना के चित्र कहे जा सकते हैं। तरह-तरह की ों से जंजीरें, घाट की सीढ़ियाँ, बैल की आँख आदि बुरी नज़र, बीमारियों से बचाव के टोटके का काम करते हैं। कुछ भक्त समुदाय जैसे रामनामी सम्प्रदाय के लोग अपने पूरे शरीर पर रामनाम गुदवाते हैं।

वैसे गोदने के इतिहास पर नज़र डालने से लगता है कि आदिवासी तथा शहरी समाजों के लिए गोदने के अलग-अलग अर्थ रहे हैं। लम्बे समय तक अपराधियों, दुश्मनों को सज़ा देने, उनकी अलग पहचान रखने के लिए दण्ड स्वरूप उन्हें गोदा जाता था। दूसरी ओर किसी समय में बड़ा युद्ध जीतने पर राजा/मुखिया के शरीर पर बतौर तमगे गोदने गोदे जाते थे। बड़े-बड़े जंगली या मिथकीय जीव, खोपड़ी, लड़ाई के अस्त्र, कुछ ऐसे ही प्रतीक थे। समुद्र में लम्बी यात्राएँ करने वाले नाविक लंगर, तोप खाना, क्रॉस, ड्रेगन के टैटू गुदवाते थे। आज पश्चिमी देशों के रॉक स्टार्स, फिल्म स्टार्स के बीच भी गुदने काफी लोकप्रिय हो गए हैं।